गोगाजी चौहान री राजस्थानी गाथा

चन्द्रदान चारण

परिचय

श्री चन्द्रदान जी चारण द्वारा लिखित 'गोगाजी चौहान री राजस्थानी गाथा' एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक शोधपूर्ण रचना है। गोगाजी के संबंध में अभी तक की समस्त सामग्री का इसमें सांगोपांग अनुशीलन करके समावेश किया गया है। लेखक ने विभिन्न विचारधाराओं के विद्वानों और उनके मतों का अध्ययन करके बड़े परिश्रम-पूर्वक यह अध्ययन प्रस्तुत किया है। लोक देवता के रूप में गोगाजी की पूजा विभिन्न प्रकार से सारे भारतवर्ष में, क्या हिन्दू और क्या मुसलमान सभी के द्वारा होती रही है। वीरभूमि राजस्थान अपने वीरों और महापुरुषों के चरित्रों को सदा लोकमानस में तरोताजा रखने के लिए उनके नाम पर कुछ विशेष तिथियाँ निश्चित करता रहा है। इसीलिए गोगा नवमी 'भाद्र-कृष्ण नवमी, भाद्र शुक्ला नवमी' को सारे राजस्थान में गोगाजी की पूजा चिर-काल से होती रही है। उस दिन घर-घर में गोगादेव की पूजा एक मिट्टी के घोड़े पर सवार हाथ में भाला लिये हुए गोगा के प्रतीक रूप में की जाती है। महिलाएँ दिवालों पर सर्पाकार आकृतियाँ मांडकर उन्हें अक्षत रोली चढ़ाती हैं। उन्हें चाहे गोगाजी के ऐतिहासिक स्वरूप की जानकारी न हो पर 'गोगा-गीत' को गाकर वे उनके प्रति श्रद्धानत होती हैं। लोकमानस में लोकदेवता के रूप में गहराई से पैठे हुए गोगा चौहान पर प्रस्तुत शोध-अध्ययन प्रस्तुत करके विद्वान लेखक ने लोक-साहित्य की बहुत बड़ी सेवा की है। पुस्तकाकार रूप में गोगाजी पर इस प्रकार की यह प्रथम कृति है।

पुस्तक को दो खंडों में विभाजित किया गया है। प्रथम खंड में गोगाजी के जीवन, उनके समय, वंश, जाति और उनकी लोकप्रियता को पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। गोगा के समय के संबंध में विद्वानों में शुरू से ही काफी मतभेद रहा है। इन सब विभिन्न मतों का तर्कपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत करके लेखक ने अपना निज का मत

स्थिर किया है जो काफी वजन रखता है। उस पर भी लेखक का कोई आग्रह नहीं है। आगे आने वाले अध्येताओं के लिए उसने गुंजाइश छोड़ी है। परिशिष्ट रूप में अन्य उपलब्ध सामग्री भी दे दी है। उन्होंने द्वितीय खंड में गोगाजी की राजस्थानी गाथा के कठिन शब्दों के अर्थ देकर मुसम्पादन किया है। लोकसंग्रह की वृत्ति बड़ी कल्याणकारी होती है। गोगाजी अपनी इसी लोकसंग्रही वृत्ति के कारण 'वीर', 'पीर' और 'गुग्गा गुरु' के रूप में सर्वमान्य रहे हैं। इसकी झलक उनके सम्बन्ध में प्रचलित विभिन्न चमत्कारों, पर्चों और किम्वदंतियों में मिलती है। इन सब का समावेश लेखक ने अपनी कृति में किया है। अत: यह कृति हिन्दी साहित्य के अध्येताओं और जनसाधारण दोनों के लिये समान रूप से उपादेय सिद्ध होगी, यह हमारा दृढ़ विश्वास है।

श्री चन्द्रदान जी चारण का इस कृति के माध्यम से हिन्दी साहित्य संसार से प्रथम परिचय हो रहा है। इसलिए उनके सम्बन्ध में थोड़ी सी जानकारी देना आवश्यक हो जाता है। श्री चन्द्रदान चारण एक अध्यवसायी अध्येता हैं। ऐतिहासिक सत्य की स्थापना करने में वे अपने से पहले के सभी विद्वानों, लेखकों व अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत सामग्री का गहराई से अध्ययन करके किसी निष्कर्ष पर पहुंचने की नीति के कायल रहे हैं। इन्होंने समय-समय पर गोगा संबंधी लेख लिखकर विद्वत् समाज का ध्यान आकिर्षत किया है। इनके प्रत्येक साहित्यिक कार्य में निष्पक्षता, शुद्धता और ऐतिहासिक सूझबूझ की छाप रहती है। अभी तक राजस्थान के विभिन्न पंथों और लोकदेवताओं पर इनके अनेक लेख पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं। विश्नोई पंथ, जसनाथी संप्रदाय, अलखिया संप्रदाय पर इन्होंने प्रचुर सामग्री प्रस्तुत की है। भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान के उप संचालक के रूप में इनकी विनम्र सेवाएं स्तुत्य हैं।

अध्यक्ष
भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर